REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 7 | ISSUE - 2 | NOVEMBER – 2017

निराला की 'राम की शक्तिपूजा' में उदात्त तत्त्व

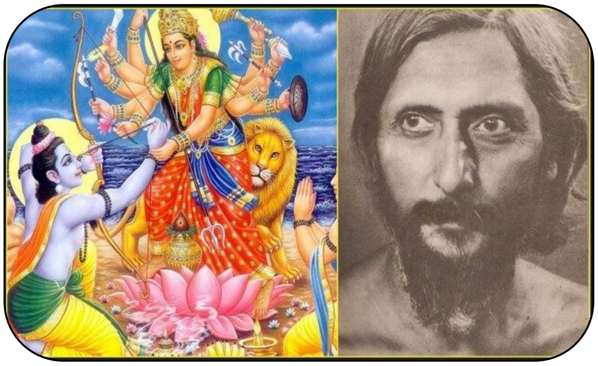

डॉ. अशोक बाचुळकर
सहायक प्राध्यापक एवं अध्यक्ष,
हिंदी विभाग, आजरा महाविद्यालय,
आजरा (महाराष्ट्र).

प्रस्तावना

हिंदी छायावादी एवं प्रगतिवादी कवियों में निराला का महत्त्वपूर्ण स्थान है। कविता में भाव, भाषा, छंद, अभिव्यंजना तथा प्रतीकों की दृष्टि से उन्होंने मौलिक प्रयोग किए हैं। मुक्त छंद का प्रयोग करनेवाले वे प्रथम कवि हैं।

निराला विलक्षण व्यक्तित्व के धनी थे। हिंदी साहित्य कोष को समृद्ध करने का अतुलनीय कार्य उन्होंने किया है। वे एक विद्रोही एवं क्रांतिकारी कवि के रूप में पहचाने जाते हैं। फिर भी उनके व्यक्तित्व में विरोधी तत्त्वों का समन्वय दिखाई देता है। गरीबों के प्रति अपार करुणा एवं सहानुभूति उनके हृदय में थी। उसी प्रकार सामाजिक विषमता के प्रति आक्रोश भी उनमें था। सामाजिक असमानता एवं अभावों ने उन्हें विद्रोही बना दिया। बाहर से कठोर एवं अंदर से कोमल निराला युगद्रष्टा थे। उनकी 'तुलसीदास', 'राम की शक्तिपूजा', 'सरोज स्मृति' तथा 'कुकुरमुत्ता' आदि कविताएँ हिंदी साहित्य की अक्षय निधि हैं।

राम की शक्तिपूजा

'राम की शक्तिपूजा' निराला की महाकाव्यात्मक रचना मानी जाती है। पौराणिक मिथक पर आधारित यह एक वीर रस प्रधान कविता है, जिसमें कवि ने मानवीय संबंधों का सूक्ष्म विश्लेषण किया है। यह मात्र मिथक नहीं, बल्कि शक्ति की उपासना जो कवि की मौलिक कल्पना है। यह निराला की अनूठी सर्जनात्मक प्रतिभा की परिचायक है।

सीता की मुक्ति हेतु रावण से युद्ध करना राम के लिए अनिवार्य हो जाता है। यह युद्ध धर्म और अधर्म का है। रावण का सामना करना राम के लिए कठिन हो जाता है। राम व्यथित हो जाते हैं। उनकी मानसिकता पर गहरा आघात होता है। निराशा के घन अंधकार से उबरने अर्थात् आसुरी शक्तियों को पराजित करने के लिए उत्कट साधना की आवश्यकता का एहसास राम को हो जाता है। तब वे शक्ति की उपासना करते हैं। शक्ति यानी दुर्गा प्रसन्न होकर उन्हें आशीर्वाद देती है -

"होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन
कह महाशक्ति राम के वदन में हुई लीन।" (अपरा, 1994)

यह कविता कवि के व्यक्तिगत जीवन से संबंधित है। "यहाँ उन्होंने अपने जीवन की अनूभूति, निराशा, पराजय, संघर्ष और विजय-कामना को नाटकीय रूप दिया है।" (रामविलास शर्मा, 1996) वही दूसरी ओर यह राष्ट्रीय भावबोध से संपृक्त भी है। युग की संवेदना से अनुस्यूत यह कविता प्रासंगिक है। धर्म की अधर्म पर, सात्त्विकता की तामसी प्रवृत्ति पर विजय अर्थात् कवि ने मानवता की विजय दिखलाई है। भारतीय स्वाधीनता संग्राम के समय ऐसी कविता की सृष्टि कवि के राष्ट्रप्रेम का ही द्योतक है। कवि देशवासियों में यह संदेश भर देना चाहता है कि अमानिशा की गहन कालिमा अधिक देर नहीं टिक पाती है। कुछ समय बाद वह विगत बन जाती है।

भावगत और कलागत औदात्त्य का अपूर्व समन्वय इस कविता की महती विशेषता है। " 'राम की शक्तिपूजा' में कवि का पौरुष और ओज चरमोत्कर्ष के साथ अभिव्यक्त हुआ है। महाकाव्य में भावगत औदात्य के अनुकूल कलागत औदात्त्य आवश्यक है। इस कविता में दोनों प्रकार की उदात्तताओं का नीर-क्षीर सम्मिश्रण हुआ है।" (सं. धीरेंद्र वर्मा, 1986) पाश्चात्य विचारक लोंजाइनस ने औदात्त्य औदात्त्य को साहित्य का श्रेष्ठ गुण माना है, जिसका सफल निर्वाह 'राम की शक्तिपूजा' में हुआ है। इसी के कारण निराला की यह रचना प्रभावशाली बन गई है। इस कविता को हम औदात्त्य के निम्न

तत्त्वों के आधार पर परखेंगे -

1. महान विचारों की उद्भावना

लोंजाइनस ने विचारों को सर्वोपरि महत्त्व दिया है। कारण विचार ही किसी कृति को महानता प्राप्त करा देते हैं। महान विचारों के लिए रचनाकार का दृष्टिकोण उदार होना चाहिए। तभी महान कृति जन्म ले सकती है। अमर, स्तुत्य एवं कालजयी रचना के लिए रचनाकार के प्रतिभावान होने पर वह बल देता है।

निराला के साहित्य पर दृष्टिपात करने से स्पष्ट होता है कि उनका दृष्टिकोण कभी भी अनुदार नहीं रहा। शूद्र और अधम विचारों से वे सदैव दूर ही रहे हैं। यही कारण है कि उनकी कई रचनाएँ कालजयी बन गई हैं। 'राम की शक्तिपूजा' ऐसे ही विचारों से अनुस्यूत एक अमर रचना है।

निराला ने इस कविता के माध्यम से संपूर्ण मानव जाति को एक महत्त्वपूर्ण संदेश दिया है कि संघर्ष जीवन का अविभाज्य अंग है। संघर्ष ही सृजन की प्रेरणा देता है। निराशा आती है, लेकिन कुछ पलों के लिए ही। तब मनुष्य को हार नहीं माननी चाहिए, बल्कि अपने को कठिन साधना में लीन रखना चाहिए। पूजा की अंतिम घडी में दुर्गा कमल चुराकर ले जाती है। कमल हाथ न लगने पर राम विचलित हो जाते हैं। स्वयं को धिक्कारते हैं। वे अपनी एक आँख अर्पित करने हेतु ब्रह्मशर हाथ में उठा लेते हैं। तभी देवी दुर्गा उदित होकर उन्हें आशीष देती है कि 'तुम्हारी जय होगी'। राम की यह परीक्षा थी। इसी प्रकार की कठिन परीक्षा का समय प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में आता है। तब हमें धीरज नहीं खोना चाहिए, बल्कि संयम से काम लेना चाहिए।

राम की जीत यानी रावण की हार। रावण की हार का मतलब है, अधर्म की पराजय। इससे कवि ने यह स्पष्ट किया है कि नैतिक अध:पतन होता है तब विनाश निश्चित है। यह भी बताया है कि अंतत: जीत सत्य की ही होती है।

सृष्टि के सही विकास के लिए स्त्री-पुरुष दोनों भी महत्त्वपूर्ण हैं। निराला ने स्त्री को शक्ति के रूप में चित्रित किया है। अनिर्णित युद्ध से राम निराश हो जाते हैं। तब उन्हें याद आता है, जानकी से प्रथम मिलन।

राम को प्रेरणा देनेवाली जानकी स्त्री और जिसकी उपासना की गई वह दुर्गा भी स्त्री ही है। स्पष्ट है कि निराला ने स्त्री को शक्तिरूप में चित्रित किया है। इस प्रकार उन्होंने अखिल स्त्री जाति को सम्मान एवं प्रतिष्ठा दिला दी है। अर्थात् हम सबको स्त्री का सम्मान करना चाहिए।

एक राजपुत्र होकर भी राम अपने से छोटों, जैसे - बिभीषण, जाबवंत आदि की बातें सुनते हैं, उनके मतों का आदर करते हैं। जाबवंत कहते हैं ऱ

"हे पुरुषसिंह, तुम भी यह शक्ति करो धारण,
आराधन का दृढ आराधन से दो उत्तर।" (अपरा, 1994)

जाबवंत की सलाह से ही राम शक्ति की उपासना करते हैं। तात्पर्य हमें छोटे-बडे का भेद न करते हुए छोटे का भी आदर करना चाहिए। ऐसे कई विचार निराला ने प्रस्तुत कविता द्वारा हमारे सामने रखे हैं।

2. प्रेरणा प्रसूत आवेग

लोंजाइनस का मानना है कि प्रेरणा प्रसूत आवेग काव्य को भव्यता प्रदान करते हैं। आवेगों के यथास्थान व्यक्त होने से रचना में जैसे औदात्त्य की सृष्टि होती है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। लोंजाइनस के शब्दों में, "भव्यता के लिए उचित प्रसंग में सच्चे भाव से बढ़कर साधक और कुछ नहीं होता। वह शब्दों को एक मनोरम उन्माद से अनुप्राणित कर देता है। उन्हें दिव्य आवेश से भर देता है।" (निर्मला जैन, 2004) लोंजाइनस ने आवेग के दो भेद (1) भव्य और (2) निम्न किए हैं।

प्रथम में रति, शौर्य, ओज, हास्य आदि आते हैं। इनसे आत्मा हर्षोल्लासित होती है। तो दूसरे में दया, शोक, भय आदि समाविष्ट हैं। जिनसे आत्मा का अपकर्ष होता है।

शक्ति की उपासना के अंत में राम -
"ले अस्त्र वाम कर, दक्षिण कर दक्षिण लोचन
ले अर्पित करने को उद्यत हो गए सुमन।" (अपरा, 1994)

हम पाते हैं कि यहाँ कवि निराला ने शौर्य नामक भव्य आवेग को चित्रित किया है। यही भाव हम हनुमान के उर्ध्वगमन के प्रसंग में भी देखते हैं।

निराला ने भव्य आवेगों के अंतर्गत रति, शौर्य और ओज आवेगों का औचित्यपूर्ण प्रयोग किया है। राम को सीता का स्मरण होता है।

"नयनों का नयनों से गोपन प्रिय संभाषण।
पल्लवों का नव पलकों पर प्रथमोत्थान-पतन।" (अपरा, 1994)

प्रस्तुत प्रसंग में रति भाव की सृष्टि हुई है। शक्ति और ओज जैसे भावों के बीच शृंगार और रोमानी भावों का समन्वय निराला के ही बस की बात है। यह कवि की अद्‌भुत सृजनशीलता का परिचायक है।

निराला ने 'राम की शक्तिपूजा' में निम्न आवेगों का चित्रण किया है, जो प्रसंग एवं परिस्थिति के अनुरूप हैं। राम-रावण का युद्ध अनिर्णित रहने पर राम निराश होते हैं। भय उत्पन्न होता है। भय का कारण अपनी पराजय नहीं, बल्कि दानवी प्रवृत्ति की विजय, अधर्म की, असत्य की जीत है। सीता की मुक्ति न करा पाने से राम व्याकुल होते हैं। यह व्याकुलता राम की नहीं, बल्कि प्रत्येक सामान्य व्यक्ति की है। इस प्रसंग में राम के प्रति पाठक के मन में करुणा निर्माण होती है। भय और करुणा दोनों भी निम्न आवेग हैं, परंतु प्रस्तुत कविता में उनकी योजना कवि ने सोच-समझकर की है। कारण जिन भव्य आवेगों को कवि ने चित्रित किया है उनके समाहित प्रभाव के लिए ये आवश्यक हैं। दूसरे शब्दों में ये पूरक हैं।

हम देखते हैं कि भावाभिव्यक्ति के लिए निराला ने परिस्थितियों से भी सहायता ली है।

3. समुचित अलंकार योजना

लोंजाइनस के युग में काव्य के अंतर्गत निर्बाध रूप से अलंकारों का प्रयोग होता था। ऐसे समय लोंजाइनस ने एक क्रांतिकारी बात कही कि अलंकारों को साध्य नहीं, बल्कि साधन रूप में अपनाना चाहिए। अलंकारों की सहजता का समर्थन करते हुए उन्होंने लिखा है कि "अलंकार सर्वाधिक प्रभावशाली तब होता है, जब इस बात पर ध्यान ही न जाए कि वह अलंकार है।" (निर्मला जैन, 2004) अलंकारों से काव्य का उत्कर्ष होने के साथ ही पाठकों को आनंदप्राप्ति होती है। उदात्त के पोषक कुछ अलंकार 'राम की शक्तिपूजा' में है, जैसे ः

(i) प्रश्नालंकार

प्रसंग को उदात्त एवं विश्वासनीय बनाने के उद्‌देश्य से निराला ने इसका प्रयोग किया है। अंजना रूप माता हनुमान से पूछती है -

"क्या नहीं कर रहे तुम अनर्थ ? सोचो मन में ;
क्या दी आज्ञा ऐसी कुछ श्रीरघुनदंन ने ?
तुम सेवक हो, छोड़कर धर्म कर रहे कार्य -
क्या असंभाव्य हो यह राघव के लिए धार्य ?" (अपरा, 1994)

बड़े ही सहज ढंग से निराला ने प्रश्नालंकार का प्रयोग किया है।बिभीषण - राम को समझाते हैं कि रावण से लड़ना अनिवार्य है। इस प्रसंग को भी प्रभावशाली बनाने हेतु निराला ने प्रश्नालंकार का कौशलपूर्वक प्रयोग किया है। इससे प्रसंग पूर्वनियोजित प्रतीत नहीं होता है, बल्कि स्थितिप्रस्तुत जान पड़ता है।

(ii) प्रत्यक्षीकरण

जहाँ वर्ण्य विषय इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है कि संपूर्ण घटना पाठकों के समक्ष उपस्थित होती है, वहाँ प्रत्यक्षीकरण अलंकार होता है। 'राम की शक्तिपूजा' में ऐसे कई प्रसंग हैं जहाँ प्रत्यक्षीकरण अलंकार का प्रयोग कवि ने किया है। उदा.

"यह अंतिम जप, ध्यान में देखते चरण - युगल
राम ने बढ़ाया कर लेने को नील कमल;
कुछ लगा न हाथ, हुआ सहसा स्थिर मन चंचल,
ध्यान की भूमि से उतरे, खोले पलक विमल,
देखा, वह रिक्त स्थान, यह जप का पूर्ण समय
आसन छोड़ना असिद्‌धि, भर गए नयन-द्‌वय।" (अपरा, 1994)

इन वर्णनों को पढ़ते समय हम अनुभव करते हैं कि हम पढ़ नहीं रहे हैं, बल्कि प्रसंग हमारे सम्मुख घटित हो रहा है।

(iii) विस्तारण

विचार अथवा तर्क की पुष्टि के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। इससे उदात्त की सृष्टि होती है। इसके तत्त्व हैं - विवरण और प्राचुर्य। 'राम की शक्तिपूजा' में प्रकृति अंकन के लिए निराला ने इसका प्रयोग किया है। दृष्टव्य हैं ये पंक्तियाँ ङ

"गाते खग नव - जीवन - परिचय, - तरु मलय - वलय,
ज्योतिः प्रपात स्वर्गीय, - ज्ञात छवि प्रथम स्वीय।" (अपरा, 1994)

औचित्य एवं प्रसंगों को ध्यान में रखते हुए निराला ने अलंकारों का प्रयोग किया है। ये अलंकार प्रसंगों के सहज अंग बनकर आए हैं।

4. उत्कृष्ट भाषा

लोंजाइनस के मतानुसार "सुंदर शब्द ही वास्तव में विचार को एक विशेष प्रकार का आलोक प्रदान करते हैं।" (डॉ. नगेंद्र, 1976) उदात्त विचारों की अभिव्यक्ति के लिए भाषा उत्कृष्ट होनी चाहिए। इसका तात्पर्य यह नहीं कि हर बार गरिमामयी भाषा का प्रयोग किया जाए, बल्कि प्रसंगानुरूप भाषा का प्रयोग किया जाना आवश्यक है।

उदात्त विचारोंवाली रचना 'राम की शक्तिपूजा' में निराला ने प्रसंगानुरूप भाषा का प्रयोग करके पाठकों पर अद्भुत छाप छोडी है। शब्द और अर्थ अभिन्न हैं। इनमें अर्थ और प्रतीक दोनों एक साथ हैं। दृष्टव्य हैं ये पंक्तियाँ ङ

"प्रतिपल - परिवर्तित व्यूह, - भेद - कौशल - समूह -
राक्षस - विरुद्ध - प्रत्यूह - क्रुद्ध - कपि - विषम - हूह,
....
राघव - लाघव - रावण - वारण - गत - युग्म - प्रहर,
उद्धत - लंकापति - मर्दित - कपि - दल - बल - विस्तर।" (अपरा, 1994)

प्रस्तुत रचना की भाषा प्रौढ़, सक्षम एवं अर्थवत्ता लिए हुए हैं। वह भावों का अनुसरण करती है। बोधगम्य, सरल और कहीं-कहीं परिनिष्ठित शब्दावली का प्रयोग निराला ने बड़ी सहजता से किया है। भाषा सुगठित होने के साथ ही ओजमयी है। इसी ओजमयी भाषा ने 'राम की शक्तिपूजा' को कालजयी कृति बना दिया है। चित्रात्मकता की विशेषता के कारण अनेक प्रसंग, स्थितियाँ एवं दृश्य चलचित्र की भाँति आखों के समक्ष उपस्थित होते हैं। निराला ने शब्दों का चयन बड़ी सावधानी से किया है। परिमार्जित शैली और संस्कृतनिष्ठ भाषा की प्रचुरता 'राम की शक्तिपूजा' में पाई जाती है। अनुभूति की तीव्र अभिव्यक्ति के लिए निराला ने ऐसी भाषा का प्रयोग किया है; पांडित्य प्रदर्शन के लिए नहीं।

5. गरिमामय रचनाविधान

लोंजाइनस ने इसे रचना का प्राणतत्त्व माना है। इसके अंतर्गत काव्यरचनासंबंधी अनेक तत्त्व आते हैं, जैसे - विचार, कार्य, शब्द, राग आदि। इन तत्त्वों में पारस्परिक सामंजस्य ही किसी रचना को गरिमापूर्ण बनाता है। सामंजस्य हमारे मन में विभिन्न भावों को उद्वेलित करता हुआ औदात्त्य की अनुभूति प्रदान करता है।

'राम की शक्तिपूजा' की प्रबंध योजना श्रेष्ठ है। इसमें जो पात्र आए हैं, उन सभी के मनोभाव तो उच्च हैं ही ; साथ ही उनके विचार एवं कार्य भी उच्च कोटि के हैं। बिभीषण, जाबवंत, हनुमान एवं वानर सेना ने राम का नेतृत्व स्वीकार कर लिया है। राम की चिंता उन्हीं की चिंता है। राम की खुशी में उन्हीं की खुशी है। अपने स्वामी के प्रति वे पूरी निष्ठा रखते हैं। उनके व्यवहार से यह निष्ठा स्पष्ट होती है। दृष्टव्य है ये पंक्तियाँ ङ

"करने के लिए, फेर वानर - दल आश्रय - स्थल।
बैठे रघुकुल - मणि श्वेत शिला पर, निर्मल जल
....
यूथपति अन्य जो, यथास्थान, हो निर्निमेष

देखते राम का जित - सरोज - मुख - श्याम - दश।" (अपरा, 1994)

पूजा के आठवें दिन अंतिम कमल हाथ न लगने पर राम अपनी आँख अर्पित करने के उद्देश्य से ब्रह्मशर हाथ में उठा लेते हैं। इस प्रकार प्रत्येक को समर्पण के लिए तत्पर रहना चाहिए। यही भाव कवि ने पाठकों के मन में भर दिया है।

गरिमामय रचनाविधान का और एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है, कल्पना। कल्पना ऐसी शक्ति है, जो कवि को मानसिक रूप में वर्ण्याविषय का साक्षात्कार कराती है। इसी की सहायता से कवि निराला ने 'राम की शक्तिपूजा' को इस प्रकार प्रस्तुत किया है कि संपूर्ण प्रसंग ही हमारे सम्मुख जीवंत हो उठा है। राम के मन में व्याप्त रावण की जीत के भय की तुलना कवि ने अमानिशा से की है। पृष्ठभूमि के रूप में यह प्राकृतिक दृश्य ङ

"है अमा - निशा ; उगलता गगन घन अंधकार ;
खो रहा दिशा का ज्ञान ; स्तब्ध है पवन - चार।" (अपरा, 1994)

संपूर्ण कविता ही कवि की मौलिक कल्पना की उपज है। इस संदर्भ में निर्मला जैन की यह टिप्पणी एकदम सार्थक प्रतीत होती है। "शक्ति की मौलिक कल्पना करने के साथ ही निराला ने शक्ति के साधक राम की प्रतिमा का निर्माण भी नवीन पुरुषोत्तम के रूप में किया है।" (निर्मला जैन, 2004)

निष्कर्ष :

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि 'राम की शक्तिपूजा' उदात्त गुणों से परिपूर्ण ऐसी रचना है। औदात्य का मूल अर्थ है - उच्च विचार अथवा ऐसे भाव जो त्याग, आत्मबलिदान या परोपकार के प्रेरक हो। कवि निराला का विचार है कि अपनी समूची शक्ति संगठित करके शत्रु से लोहा लेना है। अलग-अलग विचारधाराओं से प्रेरित हिंदुस्थानियों को संगठित होने का मंत्र कवि ने दिया है। यह भी स्पष्ट किया कि आवश्यकता पड़ने पर बलिदान के लिए भी हमें तत्पर रहना है। यही विचार उत्कृष्ट भाषा, अलंकार एवं गरिमामयी पदरचना की सहायता से इस प्रकार प्रस्तुत किया है कि संपूर्ण रचना ही उदात्त बन गई है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. जैन (डॉ.) निर्मला, उदात्त के विषय में, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण - 2004।
2. जैन (डॉ.) निर्मला, मूल्य और मूल्यांकन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, दूसरी आवृत्ति-2004।
3. डॉ. नगेंद्र, काव्य में उदात्त तत्त्व, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली -1976।
4. निराला, अपरा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, छात्र संस्करण -1994।
5. (सं.) वर्मा धीरेंद्र, हिंदी साहित्य कोश, ज्ञानमंडल प्रकाशन, वाराणसी - 1986।
6. शर्मा रामविलास, निराला, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, दूसरा संस्करण - 1996।